जल के साथ जंगल और जमीन का संरक्षण

उफरैंखाल से निकली एक नई गंगा

भारत में गंगा के अवतरण की कथा जल प्रबंधन की दिशा में किए गए पुरातन प्रयासों की एक पौराणिक कथा है। सूर्यवंशी राजा सगर के 60000 पुत्र कपिल मुनि के शाप से भस्म होकर राख के ढेर में बदल गए थे। ये राख के ढेर हजारों वर्षों तक जमीन पर पड़े रहे और मृतकों की आत्मायें अंतरिक्ष में भटकती रहीं। इसका निवारण गंगा के धरती पर अवतरण से ही हो सकता था। अतः राजा सगर के समय से ही इसके लिये प्रयास आरम्भ हो गये थे जो तीन पीढ़ी बाद राजा भगीरथ के कार्यकाल में पूरे हो सके। पिछली पीढ़ियों के पाप धोने के लिये जिस गंगा को प्रकट करने का श्रेय राजा भगीरथ को मिला, वह लाखों–करोड़ों स्रोतों से फूट कर अस्तित्व में आई थी। ये स्रोत अब कमजोर पड़ते जा रहे हैं जिन्हें बचाने के लिये भगीरथ जैसा ही बड़ा और व्यापक प्रयास किए बिना गंगा को गंगा बनाये रखना शायद संभव नहीं होगा।

उत्तराखण्ड में इस दिशा में एक अभिनव एवं सुगठित प्रयास शुरू किया है सच्चिदानन्द भारती ने। यह प्रयास अपने प्रारम्भिक दौर में देखने में छोटा जरूर लगता है लेकिन जल जैसे जीवन के लिये अनिवार्य संसाधन के स्रोतों को जीवित रखने और उन्हें बढ़ाने के लिये है बहुत महत्वपूर्ण। पूर्णतः प्राकृतिक यह तकनीक पर्वतीय जल–चक्र के सर्वथा अनुकूल है। इसलिये अन्य तकनीकों की अपेक्षा यह कहीं अधिक सफल हो सकती है।

एक नई गंगा उतरी धरती पर

वर्षा के जल को अनियंत्रित होकर विनाशकारी रूप में बहने देने की बजाय उसे इस प्रकार उलझाया जाय कि वह दौड़ने की बजाय चलना, चलने की बजाय बैठना और बैठने की बजाय धरती में रिस कर अपनी उपयोगिता को कई गुना बढ़ा दे, इस तकनीक को स्वैच्छिक संस्था दूधातोली लोक विकास संस्थान ने सच्चिदानंद भारती के नेतृत्व में विकसित किया है। सच्चिदानन्द भारती इस संस्थान के संस्थापक और प्रमुख संचालक हैं।

इस अभिनव तकनीक ने कुछ ही वर्षों के प्रयास से एक सूखे नाले को सदा नीरा बनाकर एक नई गंगा को धरती पर उतार दिया है जिसका नाम है– गाड गंगा। इस सफलता ने इस क्षेत्र के दर्जनों गावों के निवासियों के साथ ही जल पर कार्य कर रहे संगठनों तथा जल समस्या का समाधान तलाशने में जुटे विज्ञानियों और विचारकों में एक नई आशा जगाई है। इस तकनीक का फैलाव निकटवर्ती गांवों में हो रहा है और जैसे–जैसे इसका फैलाव होता जायेगा, ऐसी अनेक गंगाओं का जन्म होता चला जायेगा। इससे पर्वतीय क्षेत्रों में न केवल बढ़ते जल संकट का आसानी से मुकाबला हो पायेगा, बल्कि वर्षा जनित विनाश पर भी प्रभावी रोक लग पायेगी और प्रकृति के विभिन्न घटकों जैसे भूमि, वृक्ष, वनस्पति, वन्य जीवों व जन के बीच एक अर्थ पूर्ण सामंजस्य स्थापित हो पायेगा।

दूधातोली लोक विकास संस्थान मध्य हिमालय में स्थित उत्तराखण्ड के पौड़ी, चमोली और अल्मोड़ा जिले के मध्य में एक बहुत पिछड़े इलाके उफरैंखाल में स्थित है। इसके संस्थापक सच्चिदानन्द भारती चिपको आंदोलन में काफी सक्रियता से जुड़े रहे थे। अपने गृह–क्षेत्र में शिक्षक बन कर आने के बाद उन्होंने स्थानीय लोगों, विशेषकर महिलाओं को, संगठित और सक्रिय करके वनों को बचाने के कार्यों में लगाया और वन विभाग द्वारा कटवाये जा रहे पेड़ों को बचाने के लिये अनेक सफल आंदोलन चलाये। फिर उफरैंखाल क्षेत्र को हरियाली से पाटने का कार्यक्रम बनाया। इस कार्य में उन्हें गांधी शान्ति प्रतिष्ठान नई दिल्ली के अनुपम मिश्र और उत्तराखण्ड सेवा निधि, अल्मोड़ा के डॉ. ललित पांडे ने सहारा दिया।

समस्या ने खोजी राह

उफरैंखाल के गाड खर्क जंगल में कुछ झाड़ियां और कुछ छितरे पेड़ थे जो अनियंत्रित चराई तथा पानी के अभाव के कारण

रेखांकन : नन्दकिशोर हटवाल

लगातार घटते जा रहे थे। इसलिये सबसे पहले यहां वनीकरण की योजना बनी। जिस दौर में यह कार्य हो रहा था, उस दौर में 1987 का सबसे सूखे वाला वर्ष भी आया। लगाये गये पौधों में से ज्यादातर बिना पानी के सूख कर मरने लगे थे। इस पर चिंता के साथ चिंतन भी हुआ और उससे उबरने के लिये एक उपाय ढूंढ निकाला गया। रोपे गये पौधे के समीप एक गड्ढा बनाया गया जिसमें वर्षा का पानी जमा होता और कुछ अधिक दिनों तक पौधे को नमी देता रहता। यह तरकीब कारगर रही। इससे गाड खर्क का जंगल बढ़ने लगा।

अब डेढ़ दशक बाद वह एक पूर्ण विकसित वन के रूप में है जिसमें बाँज, बुराँस, काफल, अँयार, चीड़, उतीस, सुरई, अखरोट, अंगू, मेहल, देवदार आदि के पेड़ तथा अनेक किस्मों की घासें मौजूद हैं। प्रकृति ने भी इस प्रयास में हाथ खोल कर मदद की है और अब गाड खर्क का बंजर गाड खर्क वन के रूप में सिर उठाये खड़ा है। आज कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि गाड खर्क का यह जंगल 15–16 वर्ष पहले इक्का–दुक्का पेड़ों और कुछ छितरी झाड़ियों वाला एक बंजर भू–भाग रहा होगा।

पानी राखो अभियान

छोटे–छोटे गड्ढ़ों से पौधों को अधिक समय तक नमी मिलने से उत्साहित भारती ने तालाबों की परम्परा तथा उनकी व्यवस्था का अध्ययन करने के बाद उफरैंखाल में जल तलाइयों के निर्माण की योजना कार्यकताओं के साथ बनाईं। स्थानीय लोगों को संगठित कर गाड खर्क में श्रमदान से जल तलाइयों का निर्माण आरम्भ हुआ और देखते ही देखते डेढ़ हजार तलाइयां तैयार हो गईं। ये तलाइयां आकार और अभियंत्रण की औपचारिकताओं से एकदम मुक्त हैं, न कोई बाहरी सामग्री इस्तेमाल की गई है। जहां ठीक–ठाक ढाल देखा, वहीं पर खुदाई करके तलाई बना दी। खोदी गई मिट्टी से मेंड ऊँची कर दी और उस पर पेड़ तथा दूबड़ घास लगा दी।

इन तलाइयों में पहाड़ी के शिखर से ही वर्षा जल का संग्रहण आरम्भ हो जाता है और उनका पानी निचली तलाइयों से रिसता हुआ नालों में पहुँचता है। नालों में ज्यादा पानी संग्रहीत हो, इसके लिये पत्थर और सीमेंट के कुछ बंधे भी बनाये गये हैं। तलाइयों और बंधों में पानी जमा होता और रिसता है तथा एक जल–चक्र अपनी गति से चल पड़ता है। जल तलाइयों में 3–4 माह तक पानी रहता है और नमी तो सभी तलाइयों के आसपास प्रचुर मात्रा में रहती है जिससे गाड खर्क वन का जीवन पूरी तरह जीवंत बना रहता है और अवर्षण के लम्बे काल खंड भी उसके माथे पर सलवटें नहीं डाल पाते।

पानी के साथ वन अभिन्न रूप से जुड़ा है। वन पानी के संग्राहक, जलवायु के नियंत्रक और मिट्टी के संरक्षक हैं लेकिन वन पानी के बिना नहीं बढ़ सकते। वन के साथ एक पूरा जैविक संसार होता है जो जल और मिट्टी पर आश्रित है। इसलिये जल, मिट्टी और वन इन तीन प्राकृतिक घटकों को एक–दूसरे के बिना पोषित नहीं किया जा सकता। भारती जी तथा उफरैंखाल क्षेत्र के लोगों ने इस व्यावहारिक विज्ञान को समझा और व्यवहार में उतारा है। वनों के लिये पानी और मिट्टी चाहिए तथा पानी के लिये समृद्ध वन और सुरक्षित जमीन। इसलिये वन के संरक्षण–संवर्द्धन के लिये पानी और मिट्टी के संरक्षण का भी उपाय किया गया।

दू.लो.वि.सं. ने गाड खर्क के वन को जल, मिट्टी और वृक्ष इस संरक्षणत्रयी का अभिनव केन्द्र बनाया है। वहां वन तैयार किया गया जो पानी का संग्रहण करता है। तलाइयां बनाई गईं जो वर्षा के पानी के तेज बहाव से मिट्टी के क्षरण को नियंत्रित करने के साथ ही जल का संग्रहण करती हैं और उनका जल क्रमिक रिसाव के द्वारा जल वाहिकाओं को जल प्रदान करता है जो लम्बे समय तक वृक्ष–वनस्पतियों को पोषित करता है। इसके द्वारा ईंधन और चारे की समस्या का समाधान हुआ। इस प्रकार वन–विज्ञान के व्यावहारिक पक्ष को जल संग्रहण व मृदा क्षरण के नियंत्रण के द्वारा व्यवहार में उतार कर दिखाया गया है।

मध्य हिमालय में वर्षा काफी होती है और बंजर भूमि भी पर्याप्त मात्रा में है जिसमें घास और वनस्पतियों की उत्पादकता का स्तर भी अत्यंत निम्न है। सामान्यतः 40–45 अंश ढाल तक की बेकार पड़ी भूमि को जल तलाइयां बनाकर जल के उत्पादक के रूप में उपयोगी बनाया जाना कई अर्थों में लाभकारी है। वर्षा के जल तथा नमी के संग्रहण के साथ–साथ तलाइयों की मेंडों पर रोपे गये पौधे तथा घासें पर्याप्त नमी के कारण तेजी से बढ़ते हैं जिससे वनीकरण एवं घास रोपण का जीवित प्रतिशत काफी अच्छा है।

जल तलाइयों के इस प्रयोग ने पर्वतीय क्षेत्रों में तेजी से बह जाने वाले वर्षा–जल को रोक कर जमा करने के साथ ही भूक्षरण और भूस्खलन को कम कर मिट्टी के संरक्षण का मार्ग प्रशस्त किया है तथा वनावरण को तेजी से बढ़ाने में सहायता कर जैव सम्पदा में वृद्धि के अलावा आग से वनों को होने वाले नुकसान को कम करने जैसी अनेक समस्याओं का एक साथ समाधान ढूंढ निकाला है। इस प्रकार यह एक बहुमुखी और बहु लाभदायी कार्यक्रम है जिसके द्वारा पर्वतीय क्षेत्रों में जल, जंगल और जमीन संबंधी समस्याओं का एक साथ कारगर समाधान निकाला जा सकता है।

भरपूर वर्षा के बाद भी हिमालयी क्षेत्र बरसात के तुरंत बाद से ही जल के संकट से जूझने को विवश हो जाता है। वनों की कमी तथा जल संग्रहण परम्पराओं के ह्रास के कारण वर्षा का ज्यादातर पानी सीधे बह जाता है। वह पर्वतीय पारिस्थितिकीय तंत्र के काम नहीं आ पाता। यदि वर्षा के पानी को आंशिक रूप से भी संग्रहीत कर लिया जाये तो उससे स्थानीय स्तर पर जल की कमी दूर की जा सकती है।

वर्षा जल संग्रहण के अनेक प्रयोग हो रहे हैं लेकिन दू.लो.वि.सं. ने ताल–तलाइयों वाला जो प्रयोग किया है, वह प्राकृतिक जल–चक्र की पुनर्स्थापना की दिशा में बहुत कारगर है। इसने जन–साधारण को पानी के उत्पादक की भूमिका में स्थापित कर दिया है।

अभी तक जल प्रबंधन के तमाम प्रयास उपलब्ध जल के उपयोग तक सीमित हैं। जल के विविध उपयोगों के लिये राष्ट्रीय स्तर से लेकर ग्रामीण स्तर तक जितने विभाग बने हुये हैं, उनमें उपलब्ध जल भण्डारों के उपयोग के साथ जल की उत्पादकता बढ़ाने की दृष्टि नहीं है। समीपवर्ती स्रोत कम पड़ गया तो दूर के स्रोत जोड़ लो, ऊपरी हिस्सों के स्रोत कम पड़ गये तो नीचे से पंपों से पानी उठाओ। भूजल के भण्डार रीतते जा रहे हों तो और गहरे खोदो। अब नदियों को जोड़ने की बात हो रही है। यही हमारा जल प्रबंधन है और यही जल अभियंत्रण। मौजूदा जल–स्रोतों की उत्पादकता बढ़ाने और वर्षा के रूप में जो अथाह पानी गिरता है, उसका उपयोग करने के लिये नियोजन के स्तर पर कोई गंभीर प्रयास नहीं हो रहे हैं। दू.लो. वि.सं. ने इसी कमजोर नब्ज को पकड़ा है। जल तलाइयों के सफल प्रयोग के बाद जल प्रबंधकों, विचारकों और योजनाकारों को एक नई दृष्टि और कार्यक्रम मिल गया है– वर्षा जल की प्राकृतिक खेती का। पानी ही नहीं, जंगल और जमीन के बेहतर प्रबंधन के सूत्र भी इससे प्रकट हुये हैं।

जल से पनपा जीवन छायांकन : दू.लो.वि.सं.

पानी को पैदा किया जा सकता है क्या ? यह सवाल अब अनुत्तरित नहीं रह गया है। उत्तराखण्ड जैसे प्रचुर वर्षा वाले प्रदेश में वर्षा की खेती कर अच्छा लाभ कमाया जा सकता है।

जल, जंगल और जमीन के

दूधातोली लोक विकास संस्थान ने उफरैंखाल में जल और जंगल के बीच एक अभिन्न रिश्ता जोड़ कर जमीन और जन को समृद्धि प्रदान की है। गाडखर्क के सूखे नालों में पानी लौट आया है और गाडखर्क की बंजर पहाड़ी पर नाना प्रकार के पेड़ ऐसे उग आये है जैसे गंजे के सिर पर बाल उग आयें हों। दूधातोली लोक विकास संस्थान ने जल संग्रहण को 'पानी राखो' नाम से जन अभियान से जोड़ कर पर्वतीय क्षेत्र में जल, जंगल, जमीन और जन के समन्वय का जो अभिनव प्रयोग कर दिखाया है, उसके बारे में संस्थान के संस्थापक 48 वर्षीय सच्चिदानंद भारती से हुई बातचीत उन्हीं के शब्दों में।

• *पानी की खेती का विचार आपके मस्तिष्क में कैसे आया ?*

** वन बचाने और लगाने का काम तो गोपेश्वर में दशोली ग्राम स्वराज्य मंडल के साथ करते ही थे। उफरैंखाल में भी आरम्भ किया लेकिन सूखे से पौधों को कैसे बचायें, यह एक विकट समस्या थी। एक विचार आया कि पौधों के पास छोटे गड्ढे बना दिए जायें तो उनमें जमा पानी पौधों को लम्बे समय तक नमी देता रहेगा। यह प्रयोग सफल रहा। बाद में गांधी शांति प्रतिष्ठान के अनुपम मिश्र की सलाह पर राजस्थान के तालाब देखे और उसके बाद गाड खर्क में तलाइयों की एक श्रृंखला आरम्भ की। बाकी सब आपके सामने है। इस अभियान का नाम हमने रखा है– 'पानी राखो।'*

• *किसी भी काम के लिए संसाधन तो चाहिए। उसका प्रबन्ध कैसे किया गया?*

** आरम्भ में तो आपसी चन्दे से काम चलाया। 1985–86 में परती भूमि विकास बोर्ड ने 10 गांवों में 2 लाख पौधे लगाने तथा 10 पर्यावरण जागरूकता शिविर आयोजित करने के लिए 5 लाख रु. दिए। हमने खूब मेहनत की । पौधे ज्यादा तैयार किए। उनकी बिक्री भी हुई और लोगों को भी बाँटें। जल तलाइयों के निर्माण के लिए उत्तराखण्ड सेवा निधि हर साल 50 हजार रु. दे रहा है। इससे यह अभियान चल निकला है। सबसे बड़ी बात यह है कि दू. लो. वि. संस्थान का अवस्थापना व्यय कुछ भी नहीं है। सारे लोग स्वयंसेवक हैं और संस्थान में अवैतनिक सेवा देते हैं। इससे ग्रामीणों पर भी असर होता है। वे समझते हैं कि जब सब लोग बिना लाभ और लोभ के कार्य कर रहे हैं तो उन्हें भी कुछ करना चाहिए। लोग तो सब समझते है।*

• *इस काम को तो बड़े पैमाने पर फैलाने की जरूरत है। उसके लिए ज्यादा संसाधन और ज्यादा बड़ा तंत्र नहीं चाहिए ?*

** बिल्कुल चाहिए। हमने 50–60 हजार रु. सलाना की आर्थिक मदद से 33 गांवों में 15000 से अधिक जल तलाइयां बना दी हैं। हमारा वन सम्वर्द्धन का कार्य दर्जनों गांवों में फैला है। 133 महिला मंगल दल हमारे साथ हैं। सबके अपने–अपने खाते हैं। हमारा कहना है कि जल, जंगल और जमीन की तो बात होती है लेकिन जन की बात नहीं होती। हमने जल, जंगल, जमीन के साथ जन को भी जोड़ा है। अन्य संस्थायें भी अपने–अपने क्षेत्रों में इसे जनान्दोलन बनाने में जुटें तो यह कार्यक्रम तेजी से फैल सकता है। हमारे संस्थान का मानना है कि यदि 50–60 हजार रु. हमें हर साल मिलते रहें तो यह कार्य हम अगले 10 वर्षों में 300 गांवों में फैला देंगे। इन सभी गांवों की जल और*

जनता को जोड़ने का ताना-बाना

हमारे योजनाकार योजनाओं की असफलता पर यह कहते थकते नहीं हैं कि इन योजनाओं में जन–पक्ष की अनदेखी होती रही है। अब जन–भागीदारी द्वारा योजनाओं की सफलता की बात हो रही है। प्रयोगों और अनुभवों की आग में तप कर ढले सच्चिदानन्द भारती लोक कार्यक्रम के रूप में यह अभियान आगे बढ़ा रहे हैं।

जल, जंगल, जमीन पर्वतीय समाज की जीविका और अस्तित्व से जुड़े हैं। इन आधारभूत संसाधनों का संरक्षण, विकास और उपयोग कैसे करना है, यह ग्रामीणों से ज्यादा अच्छे ढंग से कोई और नहीं जानता। इसलिये उन्होंने लोगों को, मुख्यतः महिलाओं को, उनके ज्ञान, परम्पराओं और शक्ति के साथ अपना कार्यक्रम बनाकर आगे बढ़ाने के लिये प्रेरित किया तथा इसके लिये बुनियादी सुविधायें उपलब्ध कराईं। इसी का परिणाम है कि जल तलाइयों के साथ जंगल भी बने और उनकी उत्पादकता भी बढ़ी है। इसके साथ ही लकड़ी और घास–चारे की उपलब्धता बढ़ी है और खेती की दशा भी सुधरी है। इससे महिलाओं की पीठ का बोझ कुछ कम हुआ है और वे अपने परिवार तथा बच्चों को कुछ अधिक समय दे पा रही हैं। पानी

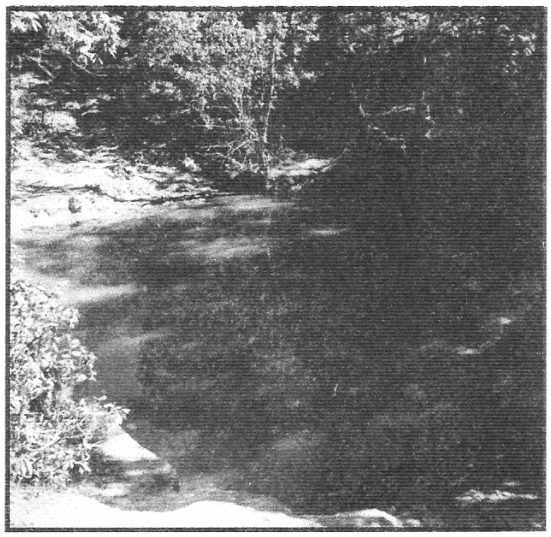

बूँद–बूँद से भरी तलाइं, संग–संग हरियाली ले आई : जल तलाइयों के बाद खिल उठा जंगल का जीवन

साथ जन को जोड़ा है

जंगल की समस्या का समाधान कर देंगे।

- *लेकिन कामों को विस्तार देने के लिए तंत्र को तो बढ़ाना पड़ेगा?*

** स्वैच्छिक संस्थायें तो सैकड़ों बनी हुई हैं। सभी का घोषित उद्देश्य ग्रामीणों के लिए कुछ न कुछ करना है। आज हो यह रहा है कि लोग सरकारी अभिकरणों से निराश होकर संस्थाओं के पास जा रहे हैं। संस्थायें भी कुछ न कुछ कर ही रही हैं लेकिन मेरा मानना है कि संस्थाओं का मुख्य कार्य समाज को संगठित और जागृत करना है। आज काम संस्थाओं की जरूरत के हिसाब से तय होते हैं जबकि लोगों की जरूरत के हिसाब से काम तय होने चाहिए। संस्थाएं जो प्रोजेक्ट बनाती हैं, वह अपने स्तर से बनाती हैं। लोगों को कहाँ पूछा जाता है ? यह पद्धति बदली जानी चाहिए। सरकारी तंत्र भी जिस ढंग से कार्य करते हैं, उससे भी कुछ विशेष होने वाला नहीं है। इसका ताजा उदाहरण यह है कि वर्ष 2000 में सरकारी जंगलों में आग लगी। जंगल भस्म होते रहे। सरकारी तंत्र आग बुझा नहीं पाया लेकिन हमारे 33 गांवों के जंगलों में आग नहीं लगी। एकाध जंगलों में लगी भी तो लोगों ने बुझा दी। महिलायें शहीद हो गईं लेकिन उन्होंने जंगल नहीं जलने दिए।*

- *जो कार्य ग्रामीणों द्वारा किया जाता है, उसका आर्थिक मूल्यांकन भी किया जाता है ? मसलन इतने वर्षों में जो कार्य किया गया, वह कितने रुपयों का है?*

** ऐसा कोई मूल्यांकन नहीं किया गया है। यदि सरकारी हिसाब से लगायें तो हजारों करोड़ रुपये का काम हो गया है। केवल तलाइयों की बात करें तो 15000 से अधिक तलाइयां बनी हैं। 4 घन मी. से 100–150 घ.मी. तक की। इसका हिसाब करोड़ों रु. में जाता है। एक पेड़ ही कई सौ का पड़ जाता है और लाखों पेड़ खड़े हो गए हैं। नमी का संग्रहण हुआ है। मिट्टी का क्षरण रुका है। नमी वाली भूमि में पेड़ और घास तो तेजी से बढ़ते ही हैं, आग से क्षति का खतरा भी कम हो जाता है। ये सब लाभ रुपयों में परिवर्तित हों तो हजारों करोड़ रुपये होता है। हम तो ग्रामीणों के श्रम का सतही मूल्यांकन इस प्रकार करते हैं कि यदि उसने 2X2X1 मी. की तलाई बनाई और उसकी मेंड पर 5 पेड़ लगाये तो उसका श्रम 50 रु. का हुआ। बाकी सामूहिक लाभ तो उसको मिलने ही हैं।*

- *आपके भावी कार्यक्रम क्या हैं?*

** प्रत्येक गांव का अपना वन और अपने तालाब हों, इस संकल्प को फैलाना है। इसके लिए हम प्रशिक्षण भी दे रहे हैं तथा प्रसार भी कर रहे हैं। हमने विगत वसन्त पंचमी से ग्राम देवता की अवधारणा को व्यवहार में उतारने का संकल्प लिया है। गांव के जंगल, रास्ते, जल स्रोत आदि ग्राम के देवता हैं और हर ग्रामवासी को महिने में एक दिन उनकी पूजा अनिवार्य रूप से करनी है। पूजा का अर्थ मात्र धूप सुंघाना नहीं है बल्कि उनकी स्वच्छता, संरक्षण, सम्वर्द्धन और विकास के कार्य करना है। जो व्यक्ति इसमें श्रमदान नहीं करता, उससे एक दिन का वेतन देने को कहा जाता है। यह कार्यक्रम भी ग्रामों में काफी तेजी से फैल रहा है।*

(यह साक्षात्कार रमेश पहाड़ी द्वारा 'जल संस्कृति' के लिए दिसम्बर 2000 में लिया गया था। गांवों और तलाइयों के आंकड़े संशोधित कर अद्यतन किए गए हैं।)

की उपलब्धता के बाद अब कुछ गांवों में उन्नत खेती के प्रयोग किये जाने लगे हैं।

गाड खर्क और उफरैंखाल से आगे बढ़ कर यह अभियान डुलमोट, उल्याणी, कफलगाँव, उखल्यों, भरनौं, जैंती, जन्दरिया, चौंडा, भराड़ीधार, मनियार गाँव आदि में सफलता पूर्वक चला। इन गांवों के लोगों ने बंजर भूमि, पानी की कमी से उजड़ गए खेतों और वन क्षेत्रों में खाली पड़ी जमीनों पर हजारों जल--तलाइयां बना दी हैं। जल तलाइयों के निर्माण और जंगल की सुरक्षा के इस लोक–प्रणीत अभियान में हर व्यक्ति को महत्व दिया गया। इसका अर्थ–शास्त्र और समाज–शास्त्र भी अनोखा तथा अनुकरणीय है। सामान्यतः 5 घनमीटर की तलाई बनाने तथा उसकी मेंड पर 5 पौधे रोपने का पारिश्रमिक 50 रु. तय है। यह लोगों ने स्वयं तय किया है। किसी को कुछ कहने–सुनने की जरूरत ही नहीं है।

एक पेड़ मेरी तरफ से भी : दू.लो.वि.सं. के 'पानी राखो' अभियान में रा.स्व.सं. के प्रमुख श्री कुप. सी. सुदर्शन पौधा रोपते हुए

छायांकन : दू.लो.वि.सं.

वहां जंगल की देख भाल के लिये भी एक अभिनव तरीका अपनाया गया है। एक लाठी होती है जिसके ऊपरी हिस्से पर 3 खांकर (बड़े घुंघरू) बंधे रहते हैं। दिन भर जंगल की चौकीदारी कर चुकी महिला या पुरुष शाम को उस खांकर वाली लाठी को अगली बारी वाले घर के दरवाजे पर रख देते हैं और वह अपनी बारी निपटा कर अगली बारी वाले दरवाजे पर। यह क्रम लगातार चलता रहता है। किसी को कुछ कहना नहीं पड़ता, सबको अपनी जिम्मेदारी का ज्ञान है।

ताल–तलाइयों के साथ सामाजिकता के इस ताने–बाने को देखने–समझने की पहल भी हो चली है। अनेक राजनीतिक एवं सामाजिक लोग, वन एवं जल विज्ञानी, पर्यावरण चिन्तक, जलागम विकास पर कार्य कर रहे संगठनों के कार्यकर्ता इस तकनीक को देखने और सीखने उफरैंखाल पहुंच रहे हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख कुप सी. सुदर्शन, राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्षा श्रीमती पूर्णिमा आडवाणी, विश्व बैंक की प्रतिनिधि सुश्री विंडा आदि विशिष्ट लोग गाड गंगा के भगीरथ भारती के प्रयासों को देखने उफरैंखाल पहुंच चुके हैं।

1999 में विश्व बैंक की एशिया–यूरोप मामलों की प्रतिनिधि सुश्री विंडा ने इस कार्यक्रम से प्रभावित होकर दू.लो.वि.सं. के कार्य क्षेत्र में जल तलाइयों के निर्माण के साथ ही समग्र विकास के कार्यक्रमों के संचालन के लिए 10–12 सौ करोड़ रु. के प्रस्ताव स्वीकृत करने की पेशकश की जिसे भारती जी ने विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया।

उत्तराखण्ड सेवा निधि, गांधी शांति प्रतिष्ठान, पर्यावरण एवं विज्ञान केन्द्र आदि प्रमुख संस्थान इस अभियान के को समर्थन दे रहे हैं। लोक विज्ञान संस्थान जलागम प्रशिक्षुओं को उफरैंखाल ले जाकर इस तकनीक को दिखा रहा है। इससे प्रेरित होकर अनेक क्षेत्रों में लोगों द्वारा ताल–तलाइयां बना कर वर्षा के पानी के संग्रहण किया जाने लगा है। इसका लाभ निचले क्षेत्रों में स्थित स्रोतों तथा सूखे नालों में पानी की अधिक लम्बे समय तक उपलब्धता के रूप में मिल रहा है।

घास जंगल खेत पानी, इनके बिना योजना कोनी : रा. महिला आयोग की अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमा आडवाणी विश्व पर्यावरण दिवस पर उफरैंखाल में कार्यकर्ताओं की बात सुनते हुए

छायांकन : दू.लो.वि.सं.

गंगा का अवतरण सगर पुत्रों के उद्धार के सीमित उद्देश्य से हुआ था, भले ही गंगा इससे बड़े उद्देश्यों की पूर्ति कर रही है। लेकिन गाड गंगा अनेक बड़ी समस्याओं के समाधान के सूत्र के रूप में लोक पुरूषार्थ के द्वारा अवतरित हुई है। इसके उद्देश्य भी असीमित हैं– सूखते स्रोतों को पुनर्जीवित कर गंगाओं का अस्तित्व बनाये रखना और लोक पुरुषार्थ को नये सन्दर्भ तथा नये अर्थ प्रदान करना।